॥ श्रीः ॥

चौखम्बा संस्कृत ग्रन्थमाला

582

महर्षिगौतमप्रणीतं

गौतमीयमहातन्त्रम्

'ज्योत्स्ना' भाषाभाष्योपेतम्

(श्रीकृष्ण का तान्त्रिक अर्चन-विवेचक ग्रन्थ)

भाषाभाष्यकारः

आचार्य श्रीनिवास शर्मा

चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन

वाराणसी

विषयानुक्रमः

विषयाः पृष्ठाङ्काः

प्रथमोऽध्यायः १-४

[मुनि नारद द्वारा महर्षि गौतम के प्रति श्रीकृष्ण के दशाक्षर मन्त्र का श्रेष्ठत्व-प्रतिपादन।]

द्वितीयोऽध्यायः ५-३२

[नारद द्वारा गौतम से दशाक्षर मन्त्र का वीज एवं शक्ति, व्रह्मपञ्चक, ऋषि-छन्द-देवता, मन्त्रादि न्यास, संहारादि न्यास, दशाक्षर मन्त्र, द्विविध मातृका, अन्तर्मातृका न्यास, मातृकाओं का चातुर्विध्य, प्राणायाम-माहात्म्य, प्राणायाम के भेद आदि का कथन।]

तृतीयोऽध्यायः ३३-४०

[न्यासजाल-कथन, पञ्चाशद् वर्णकर्णिका न्यास, प्रणवांशाक्षरों के विविध अर्थों का कथन, विविध शक्तियों का परिचय, महामनुन्यासादि कथन।]

चतुर्थोऽध्यायः ४१-४५

[वृन्दावन-दर्शन एवं भगवत्स्वरूप का चिन्तन।]

पञ्चमोऽध्यायः ४६-५६

[भगवन्मन्त्रों में अधिकारिता-वर्णन, गुरु-शिष्य के लक्षण, ब्राह्मणादि वर्ण के शिष्यों की योग्यता का परीक्षण-काल, चैत्रादि मासों में मन्त्रारम्भ का फल, दीक्षा में काल-विशेष, भूमि के भेद, वास्तुमण्ड़ल-विधान, भूमिशुद्धि, देवपूजन, दिक्पाल-पूजन, ईशानादि में बलि-विधान आदि का कथन।]

षष्ठोऽध्यायः ५७-६३

[यागमण्ड़पादि की रचना, कुण्ड़ादि की रचना, भूतबलि का उत्सर्ग, बीजरोपण आदि का कथन।]

सप्तमोऽध्यायः ६४-७५

[दीक्षा-निरुक्ति, आचार्य-वरण, वरण के पूर्वकृत्य, गुरुध्यान, कुण्ड़लिनी-ध्यान, स्वयं एवं कृष्ण में अभेद-चिन्तन, नित्य कृत्य, पूजा के पाँच भेद, स्नान के दो

विषयाः **पृष्ठाङ्काः**

प्रकार, स्नान-विधान, तर्पण, गायत्री-जप, शंख-चक्र के अंकन का माहात्म्य, भगवान् के द्वादश भेद आदि का कथन।]

अष्टमोऽध्यायः ७६-८३

[वैष्णवों की द्वादश शुद्धि, वृन्दावन आदि का ध्यान, द्वार आदि में नन्द आदि का आवाहन एवं पूजन, भूतोत्सारण, आसनों के फलभेद, पूजाप्रकार, आचार्य-वरण, पूजन, सूत्रन्यास, राशिचक्र, मण्ड़ल-निर्माण, रज के भेद आदि का कथन।]

नवमोऽध्यायः ८४-९९

[पञ्चगव्य से शरीर एवं मण्ड़ल आदि का शोधन, पञ्चगव्य-प्रमाण एवं उसका शोधन, भूतशुद्धि, षट्चक्र-चिन्तन, पच्चीस तत्त्वों का पुष्पों से योजन, प्राणायाम-विधान और उसके माहात्म्य आदि का कथन।]

दशमोऽध्यायः १००-१२४

[तेज एवं कुण्ड़लिनी का मेलन, कुण्ड़-मध्य में आवाहन कर भगवान् का पूजन, शालग्राम की प्रशंसा, कृष्णप्रतिमा का निर्माण, प्रतिमा के भेद, वैष्णव-पुष्प, श्रीकृष्ण की आठो पटरानियों के वेश-भूषादि, बलभद्र-सुभद्रा का पूजन, आठो निधियों में इन्द्रादि का पूजन, श्रीकृष्ण का ध्यान, मुद्रा-निरुक्ति, मुद्राभेद आदि का कथन।]

एकादशोऽध्यायः १२५-१३५

[हवन-विधान, अग्नि के संस्कार-ध्यान आदि, अग्निवास-विधानादि का कथन।]

द्वादशोऽध्यायः १३६-१४१

[शुभाशुभ स्वप्न के लक्षण, हवन, दिक्पाल-पूजन, ग्रह-नक्षत्रादि का पूजन, ब्रह्मार्पण मन्त्र आदि का कथन।]

त्रयोदशोऽध्यायः १४२-१४५

[मन्त्रदान की विधि, गुरुदक्षिणा, शिष्य के नियमादि का कथन।]

चतुर्दशोऽध्यायः १४६-१६१

[पुरश्चरण-विधि, पुरश्चरण के नियम, मालाभेद, फल के प्रकार, जपविधि, जप के भेद, जप के उपरान्त हवनादि का विधान, हवन के अभाव में प्रतिनिधि-विधि, दशाक्षर एवं अष्टादशाक्षर मन्त्र की जपसंख्या, तर्पण-अभिषेक आदि, स्थानविशेष में जपसंख्या आदि का कथन।]

विषयाः **पृष्ठाङ्काः**

पञ्चदशोऽध्यायः **१६२-१७२**

[श्रीकृष्ण का त्रिकाल-पूजन, श्रीकृष्ण-ध्यान, नैवेद्य-समर्पण, मध्याह्न में श्रीकृष्ण-ध्यान, पूजन, भगवान् की शक्तियों का पूजन, वासुदेव आदि का पूजन, हवन-विधान, भगवान् का ध्यान, मन्त्रजप, सायंकाल में वासुदेव का पूजन, पूजन के फल आदि का कथन।]

षोडशोऽध्यायः **१७३-१८२**

[गोपालमन्त्र का उद्धार, गोपाल का ध्यान, गोपाल का पूजन, हवन आदि का कथन।]

सप्तदशोऽध्यायः **१८३-१९२**

[भगवान् के विविध रूपों के जप एवं फल, दुर्गा आदि के बीज, तत्तत् उपचारों से पूजन का फलभेद, सम्बन्धित फल की कामना के अनुसार जप आदि का कथन।]

अष्टादशोऽध्यायः **१९३-२०१**

[भगवान् के तत्तत् कालों के स्वरूपों के दर्शनादि का फल, सम्बन्धित यन्त्र-मन्त्र आदि के प्रयोग का फल आदि का कथन।]

एकोनविंशोऽध्यायः **२०२-२०७**

[भगवन्मन्त्रों के जप का फल, कालानुसार उपचार-समर्पण के फल आदि का कथन।]

विंशोऽध्यायः **२०८-२१३**

[श्रीकृष्ण के विविध मन्त्र एवं उन मन्त्रों के नियमपूर्वक जप के फल आदि का कथन।]

एकविंशोऽध्यायः **२१५-२२४**

[श्रीकृष्ण के द्वाविंशाक्षर मन्त्र की महिमा, द्वाविंशाक्षर मन्त्र का उद्धार, श्रीकृष्ण का ध्यान एवं जप, मन्त्रित पदार्थों का भक्षण, तत्तत् मन्त्रों के जप का फल, जप-हवनादि की संख्या आदि का कथन।]

द्वाविंशोऽध्यायः **२२५-२२९**

[गोपालपिण्ड मन्त्र, ऋषि-छन्द-देवता, मन्त्र का जप-हवन आदि, महामन्त्र वर्ण, उनके धारण के फल आदि का कथन।]

विषयाः | पृष्ठाङ्काः

त्रयोविंशोऽध्यायः २३०-२४१

[मन्त्रोद्धार-प्रसंग, मन्त्रराज-कथन, मन्त्र के ऋषि-छन्द-देवता, मन्त्रजप, जपसंख्या के अनुसार विविध पदार्थों से हवन के फल, अष्टादशाक्षर मन्त्र, अष्टादशाक्षर मन्त्र के ऋषि-छन्द-देवता, मन्त्र का जप, त्रयोदशाक्षर मन्त्र एवं उसके ऋषि-छन्द आदि, भगवान् का ध्यान एवं मन्त्रजप, मन्त्रभेद, मन्त्रोपासना की महिमा, सपरिवार हरि का स्मरण, जपान्त में हवन, कामगायत्री और उसकी महिमा, यन्त्रधारण, तत्तत् पदार्थों से हवन के फल आदि का कथन।]

चतुर्विंशोऽध्यायः २४२-२५०

[मन्त्रोद्धार प्रसंग, षोडशाक्षर मन्त्र, मन्त्र के ज्ञान-ध्यान-स्मरण के फल, ऋषि-छन्द-देवता, श्रीकृष्ण का ध्यान, मन्त्रजप, हवन, पदार्थों के अनुसार हवन के फल, दशाक्षर मन्त्र के ऋषि-छन्द-देवता, श्रीकृष्ण का ध्यान-जप-हवनादि, मन्त्रान्तर एवं उनके ऋषि आदि, सिद्धगोपाल मन्त्र, श्रीरामकृष्ण का ध्यान, दशाक्षर-षोडशाक्षर मन्त्र आदि का कथन।]

पञ्चविंशोऽध्यायः २५१-२६२

[मन्त्रोद्धार-प्रसंग, द्वादशाक्षर मन्त्र एवं उसके ऋषि-छन्द-देवता आदि, श्रीकृष्ण का ध्यान, मन्त्रजप-हवन आदि, श्रीकृष्ण के द्वारपालों का पूजन, विघ्नेश आदि का पूजन, वास्तुपुरुष का पूजन, गुरु पद की निरुक्ति, नारदादि गुरु आदि का पूजन, पादुका पद-निरुक्ति, पीठपूजन, श्रीकृष्ण-मूर्तिस्थापन की महिमा, मन्त्रान्तर एवं उनके ऋषि आदि, श्रीकृष्णध्यान-पूजन-हवन आदि, विविध पदार्थों के हवन के फल आदि का कथन।]

षड्विंशोऽध्यायः २६३-२७३

[मन्त्रोद्धार प्रसंग, पञ्चाक्षर-षडक्षर-अष्टाक्षर एवं दशाक्षर मन्त्र तथा उनके ऋषि-छन्द-देवता आदि, श्रीकृष्णध्यान, मन्त्रजप-हवनादि, दशाक्षर एवं चतुर्दशाक्षर मन्त्र, मन्त्रजप की महिमा, मन्त्र के ऋषि आदि, श्रीकृष्णध्यान, मन्त्रजप, हवन, तर्पण, मन्त्रान्तर, चूड़ामणि मन्त्र एवं उसके ऋषि आदि का कथन।]

सप्तविंशोऽध्यायः २७४-२७८

[मन्त्रोद्धार प्रसंग, त्रैलोक्यमोहन मन्त्र, श्रीकृष्ण-ध्यान, सपरिवार भगवदावाहन एवं पूजन, मन्त्रजप एवं हवन, अष्टाक्षर मन्त्र, विष्णुगायत्री एवं उसकी महिमा।]

विषयाः — पृष्ठाङ्काः

अष्टाविंशोऽध्यायः — २७९-२८४

[मन्त्रोद्धार प्रसंग, दशाक्षर मन्त्र एवं उसके ऋषि-छन्दादि, सपरिवार श्रीकृष्ण का ध्यान, मन्त्रजप-हवनादि, पदार्थविशेष के हवन से फलभेद आदि का कथन।]

एकोनत्रिंशोऽध्यायः — २८५-२९३

[पुरुषोत्तम मन्त्र का उद्धार, सपरिवार श्रीकृष्ण का ध्यान, मन्त्रजप, हवन, विष्णुगायत्री, मन्त्रान्तर, आयुध-सहित श्रीकृष्ण का पूजन, हवन, पदार्थविशेष के हवन से फलभेद, सर्वतोभद्र यन्त्र और उसका धारण।]

त्रिंशोऽध्यायः — २९४-३०७

[मन्त्रसिद्धि-कथन, मन्त्रसिद्धि के लक्षण, मन्त्रसिद्धि के तीन प्रकार, मन्त्रसिद्धि के उपाय, मन्त्र के दश संस्कार, संस्कारों में अन्तर, श्रीकृष्ण के पुरश्चरण मन्त्र का वैशिष्ट्य, सिद्धि के अन्य उपाय, ग्यारह प्रकार के मन्त्रप्रयोग, मन्त्रसिद्धि के सात उपाय, अन्यान्य उपाय।]

एकत्रिंशोऽध्यायः — ३०८-३२०

[आराधन-विधि, दीक्षित का सदाचार, उसके विधि-निषेध, प्रशस्त स्थान, प्रशस्त पुष्प, दीक्षित के नित्य कृत्य, एकादशी आदि व्रत, गोदानादि।]

द्वात्रिंशोऽध्यायः — ३२१-३३६

[योग पद की निरुक्ति, योग के आठ अंग एवं उनके लक्षण, मन्त्रयोग, दश मुख्य नाड़ियाँ, षट्चक्र एवं उसके अभ्यास का फल, धारणा एवं उसके स्थान, अभ्यासयोग, समाधि, ज्ञान-माहात्म्य, अपक्व योगी के और्ध्वदैहिक संस्कार, गौतम तन्त्र का माहात्म्य।]

●